● **पढ़ो और गाओ :**

२. जीवन

जीवन है चलने का नाम ।
करना कभी नहीं विश्राम ।।

घड़ी सदा टिक-टिक करती,
रुकने का नहीं लेती नाम ।
घड़ीनुमा सब आगे बढ़ना,
सूरज-सा नित ऊपर उठना ।
कण-कण में अपनत्व देखकर,
सबको दिल से करो प्रणाम ।।

लहराना सागर से सीखो,
आसमान-सा हृदय विशाल ।
सहनशील बन धरती जैसे,
मिलजुल करते जाना काम ।
जो चलता वह आगे बढ़ता,
मेहनत कर पाता पद नाम ।।

माँ जैसी हो मीठी बोली,
मन में सच्चे उच्च विचार ।
अपने जैसा सबको जानो,
सेवा का कर लो सुविचार ।
जीवन है चलने का नाम,
करना कभी नहीं विश्राम ।।

– डॉ. कुलभूषणलाल मखीजा

१. अपनी दिनचर्या बनाओ और सुनाओ ।
२. तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए क्या-क्या करती हैं, बताओ ।

JQCHV2

❑ विद्यार्थियों को साभिनय गीत सुनाएँ और उनसे दोहरवाएँ । सामूहिक अभिनय के साथ गाने के लिए कहें । लयात्मक शब्दों का अनुवाचन कराएँ । कविता की लयात्मकता की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उचित लय में गीत गवाएँ ।